ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्राश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176
हम वेद मन्त्रों के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 38, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 08 जून, 2015 से रविवार 14 जून, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया 27 से 29 नवम्बर 2015

तैयारियों हेतु सार्वदेशिक सभा अधिकारियों की न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया व फिजी यात्रा

दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में इस प्रथम अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लेकर भारी उत्साह

फिजी के आदिवासी भी जब हिन्दी बोलते हुए नमस्ते करते हैं तो फिजी में आर्य समाज का इतिहास स्वतः सामने आ जाता है

न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के अनेक शहरों में आर्य समाज की गतिविधियों को विस्तार मिलेगा इस महासम्मेलन से

विश्व के समस्त आर्यजनों को सिडनी पधारने का हार्दिक आमंत्रण -जगदीश चन्द्र, प्रधान, आ.प्र.स. आस्ट्रेलिया

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की लंबी श्रृंखला के अन्तर्गत दिल्ली में वर्ष 2012 में संपन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर पारित प्रस्ताव के अनुसार वर्ष 2015 का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भारत के सुदूर दक्षिण में अवस्थित आस्ट्रेलिया महाद्वीप के सिडनी शहर में आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन के लिए 27, 28, 29 नवम्बर 2015 की तिथियां निर्धारित हो चुकी हैं। इस सम्मेलन को भव्य यादगार एवं सफल बनाने के लिए क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ अपने अनुभव सांझा करने हेतु आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा के निमंत्रण पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य एवं उप मंत्री श्री विनय आर्य 2 मई को आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हुए और सिलसिले वार ऑकलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, फिजी और फिर सिडनी मेलबर्न आदि में ...शेष पृष्ठ 5 पर

भारत में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सन् 2006 के अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विश्व की आर्य समाजों को गति देने व विश्व की सभी आर्य समाजों को संगठित करने की दृष्टि से भारत के बाहर भी आर्य महासम्मेलन करने की योजना बनाई गई थी। इसी योजना की प्रगति के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य आस्ट्रेलिया पहुंचे। जहां उन्होंने नवम्बर 2015 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने की पूर्व योजना विस्तृत रूप से तैयार की। -सम्पादक

उत्साह के साथ मनाएं अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन व्यायाम का करें सामूहिक आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रथम आयोजन 21 जून 2015 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सतसंग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के संबंध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं।

निवेदकः **आचार्य बलदेव** (प्रधान)सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा **प्रकाश आर्य** (मंत्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली में योग दिवस पर विशेष आयोजन

सानिंध्य	रविवार	समय	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल,
साध्वी उत्तमायति	21 जून 2015	प्रातः 6 से 7.30 बजे	प. पंजाबी बाग, दिल्ली

महाशय धर्मपाल	राजीव आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	सत्यानंद आर्य	अरविंद नागपाल
प्रधान	महामंत्री	प्रधान	महामंत्री	प्रधान	प्रबंधक
आर्य केन्द्रीय सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		एम.एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

यात्रा संस्मरण

मेरी पाकिस्तान यात्रा

- गौरी शंकर भारद्वाज

आर्य समाज के इतिहास में वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के संगठन के विस्तार तथा प्रचार-प्रसार में संयुक्त पंजाब का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आर्य समाज द्वारा धर्म सुधार एवं सामजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक क्रांति का मुख्य स्थल लाहौर ही रहा। स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा आनन्द स्वामी, डॉ. मेहर चंद महाजन, महाशय कृष्ण जी, पं. चमूपति जी, लाला मूलराज जी, महाशय राजपाल जी व बक्शी टेकचंद जी आदि महान आर्य विभूतियों का कर्मस्थल संयुक्त राज्य पंजाब विशेषकर लाहौर ही रहा। ऐसी पुण्य भूमि के दर्शन करने की मेरी उत्कंठ ...शेष पृष्ठ 2 पर

शहीद भगत सिंह चौक लाहौर पर खड़े गौरी शंकर भारद्वाज

सम्पादकीय

बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ़ा नाम 'मैगी' तैयार 'बस दो मिनट' अपने तेरह में से दस नमूनों में फेल पायी गयी या ये कहो भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफ एस एस आई) पिछले बीस सालों से फेल था, जो अब जाकर पास हुआ! जो अब मैगी पर कड़ी कार्यवाही करने का फैसला ले रहा है। चलो अच्छा है स्विटजरलैंड की इस कम्पनी की भारतीय इकाई के खिलाफ भारत सरकार ने कार्यवाही का निर्णय लिया। किन्तु एक नैस्ले का उत्पाद मैगी ही क्यूं ? यहां तो और भी अन्य बहुत सारी विदेशी कम्पनियां अपने देश का कचरा डिब्बों और पैकेटों में रखकर बेच रही हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही क्यूं नहीं ? हजारों विदेशी खाद्य उत्पाद ऐसे हैं, जिन्हें हम स्वाद-स्वाद में खाते हैं, परन्तु उस स्वाद में विदेशी कचरा (विदेशी जहर) होता है। सड़े बेकार तेल, रिफाइंड से, लचीली सुअर की चर्बी के मिश्रण से तैयार ये उत्पाद बनाकर भारत में भेज दिये जाते हैं ताकि उन्हें मुनाफा मिले और हमें बीमारी!

अब यदि सोचा जाये तो, मैगी की शिकायत हुई, तो ही जांच हुई वरना हम ये जहर पिछले बीस सालो से खा रहे थे। सरकारों ने आयात शुल्क लिया, डिस्टीब्यूटर्स ने, दुकानदारों ने अपना-अपना मुनाफा लिया, किन्तु उन लोगों को क्या मिला!' जो अपने शरीर में 17 गुणा ज्यादा लेड यानि सीसा बटोर रहे थे?

जानकार कहते हैं, खून में सीसे की अधिक मात्रा जमा होने से कैंसर, दिमागी बुखार, मिर्गी या किडनी खराब हो सकती है। और तो और कुछ मामलों में मौत भी हो सकती है। एक अनुमान के मुताबिक सवा सौ करोड़ की जनसंख्या वाले देश में खाने-पीने की गुणवत्ता जांचने वाले मात्र तीन हजार लोग हैं। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हम अपनी और अपने बच्चों की सेहत का ख्याल खुद रखें दो मिनट के चक्कर में सेहत से खिलवाड न करें।

सम्पादक

प्रभो! तू हमारे हृदय-मंदिर में रम जा, बस जा

आचार्य अभयदेव

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्यइव स्व ओक्ये।।
. ऋषिः- राहूगणो गोतमः।। देवता-सोमः।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ- गावः न यवसेषु -जैसे गौएँ जौ के खेत में आकर रमण करती हैं, आनन्दित होती हैं और **मर्यः स्व ओक्ये इव**-जैसे मनुष्य अपने निजी घर में बसता है, वैसे ही **सोम** - हे सोम्यस्वरूप प्रभो। **त्वम्** - आप **नः हृदि** - हमारे हृदय में **आ** - आकर **रारन्धि**- सदा रमण करो व बस जाओ।

विनय- हे देव! तुम मेरे हृदय में आ विराजो, इसी में रमण करो। कहने को तो पहले बहुत बार ऐसी प्रार्थना मैंने की है तथा औरों को करते सुना है, परंतु शायद तब मैं न तो अपने हृदय को जानता था और न तुम्हें जानता था। तुम तो मुझमें तभी विराज सकते हो जब मेरा हृदय स्वार्थ से बिल्कुल शून्य हो, सर्वथा निर्मल हो। इसीलिए अब मैंने अपने जीवन के लिए भागीरथ- यत्न से हृदय को पवित्र किया है। मैंने झूठ, हिंसा, कुटिलता, असंयम आदि विकारों के मैल को ही नहीं निकाला है अपितु बड़े यत्न से क्षण-क्षण आत्मनिरीक्षण करते हुए राग और द्वेष के सूक्ष्मातिसूक्ष्म मल को भी खुरच-खुरचकर निकाला है और अतएव अब इसमें भक्ति- स्रोत भी खुल गया है, इसीलिए मैं अब तुम्हें बुलाने की हिम्मत करता हूँ। हे मेरे जीवनसार। मैं कहता हूँ कि तुम मेरे हृदय में ऐसे आ जाओ जैसे गौवें जौ के हरे खेत में प्रसन्नता से आकर खाने का आनन्द लेती हैं, क्योंकि मैंने भी न केवल अपने हृदय को तुम्हारे योग्य स्वच्छ बनाया है, किंतु इसमें भक्ति का रस भी जुटा रखा है। मेरे इस हार्दिक प्रेम का रसास्वादन करने के लिए तुम यहाँ आओ। मेरा प्रेम देखता है कि अब तुम ही मेरे प्राणों के प्राण हो, तुम्हारा स्पर्श मेरा जीना है और तुम्हारा हट जाना मेरी मौत है। इसलिए मेरा हृदय पुकारता है कि तुम मुझ में आकर सदा रमण करो। क्या मेरा सच्चा ज्ञानमय प्रेम तुम्हें यहाँ नहीं खींच लाएगा? नहीं मैं भूल करता हूँ, तुम मेरे हृदय में न केवल आओ किंतु आकर इस तरह बस जाओ जैसे मनुष्य अपने घर में रहता है व रमण करता है। मेरी भक्ति आर्त्त, जिज्ञासु व अर्थार्थी की भक्ति नहीं है, क्योंकि मैंने अपने हृदय से अब 'अहंकार' को भी सर्वथा निकाल दिया है। अब यह शरीर तेरा है, यह हृदय अब तेरा अपना घर है। 'मैं' 'मम' सब यहाँ से लोप हो गया है। हे आत्मा- की आत्मा सोम! सर्वथा विशुद्ध इस हृदय में आप यथेच्छ रमण करो, अब यह तुम्हारा घर हो गया है।

साभार- वैदिक विनय

वैदिक विनय, वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

पृष्ठ 1 का शेष **मेरी पाकिस्तान ...**

अभिलाषा जागृत हो गयी, जब मैंने प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती पद्मा सचदेवा के एक लेख में पढ़ा कि 'जिना लाहौर नहीं वेख्या, वो जम्या ही नहीं।' पाक अधिकृत पंजाब विशेषकर लाहौर सदृश आर्य समाज के अतीत के गौरव स्थलों को देखने की उत्कंठा अत्यंत बलवती हो गयी। पाकिस्तान का वीजा मिलना अत्यंत दुष्कर है। मैं पाक वीजा प्राप्ति के लिए काफी दिन से प्रयासरत था। सौभाग्यवश दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से वैशाखी पर्व पर पाक स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारों के दर्शन करने वाले सिख जत्था के साथ जाने का मुझे वीजा मिल गया। 11 अप्रैल को प्रातः 9 बजे हम अटारी बॉर्डर पर पहुंच गये। वहां इम्मीग्रेशन तथा कस्टम विभागों द्वारा जांच करने के पश्चात् लगभग 3 बजे पाकिस्तान के लिए

ट्रेन रवाना हुई। विभाजन के समय के भीषण हत्याकाण्ड तथा लोहमर्षक घटनाओं को याद करके ऐसा लगा कि हम एक अंधेरी गुफा में प्रवेश कर रहे हैं। विभाजन के समय तो मानो पंजाब की नदियों का पानी शराब बन गया था, जिसे पीकर लोग हैवान बन गये थे। इंसानियत मर गयी थी, लेकिन वक्त के साथ फिजां बदल गयी। लाहौर पहुंचने पर हमारा डर पूर्णतः समाप्त हो गया। लाहौर स्टेशन पर सामान्य व शांत वातावरण था। लाहौर पर ट्रेन केवल 5 मिनट रुकी, जहां से हमें लगभग 300 किलोमीटर दूर पंजा साहिब गुरुद्वारे के निकटवर्ती

'हसन अब्दाल' स्टेशन जाना था। विदित हो कि 'हसत अब्दाल' वही स्थान है जहां तक चीन अपने सीमावर्ती शहर से रणनीतिक सड़क बना रहा है। हम लम्बे रास्ते में रावी व झेलम नदियां पार करके गुजंरावाला, लालामूंसा, वजीराबाद, झेलम तथा रावलपिंडी आदि शहरों से होकर गुजरे। रावलपिंडी का बहुत सुन्दर स्टेशन है। वहां थोड़ी देर ही ट्रेन रुकी। सम्पूर्ण रास्ते पर गाड़ी के दोनों ओर लोगों ने प्रसन्न मुद्रा में हाथ हिलाकर हमारा भाव भरा स्वागत किया। यह देख कर निराशा हुई कि रास्ते में पड़े अधिकांश मकानों में पलस्तर नहीं था। हमें पाकिस्तान में कहीं विकास नजर नहीं आया। हम लगभग रात्रि 11 बजे 'पंजा साहिब गुरुद्वारा' पहुंचे। यहां से सिंधु नदी केवल 40 किलोमीटर तथा पेशावर 120 मिलोमीटर दूर है। सम्पूर्ण क्षेत्र अत्यंत संवेदनशील है। सुरक्षा एजेंसियों का जबरदस्त घेरा था। वहां 3 दिन के प्रवास में हमें गुरुद्वारे से बाहर नहीं जाने दिया गया। वैशाली के दिन सीमाप्रान्त (फ्रंटियर) के अल्प संख्यकों के मामलों के मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह से भेंट हुई जो कई साल दिल्ली में रहे हैं। 14 अप्रैल को हम 'गुरुद्वारा ननकाना साहिब' पहुंच। यह किलेनुमा विशाल गुरुद्वारा है। गुरुद्वारे में हजारों कमरे हैं। यहां गुरुद्वारे से बाहर जाकर शहर में घूमने की पूरी आजादी मिली। 16 अप्रैल को ननकाना साहिब से बस द्वारा शेखुपुरा जिला स्थित 'गुरुद्वारा सच्चा सौदा' दर्शनार्थ गये तथा सायंकाल वापस ननकाना साहिब आ गये। अब तो 'ननकाना साहिब' नाम से एक अलग जिला बना दिया गया है। 17 अप्रैल को हम ननकाना साहिब से ट्रेन से रवाना होकर सायंकाल 'गुरुद्वारा डेरा साहिब' लाहौर पहुंचे। लाहौर में भी एक 'शाहदरा' उपनगर है, जहां से ननकाना साहिब जाने के लिए रेलवे लाइन बदलनी पड़ती है। गुरुद्वारा डेरा साहिब में हमारे भेंट 'एवाक्यू ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड' के अधिकारियों से हुई। स्मरण रहे कि पाक स्थित सभी गुरुद्वारे, हिन्दू मंदिरों तथा अन्य अल्प संख्यक स्थानों का नियंत्रण व व्यवस्था एवाक्यू ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड द्वारा की जाती है सम्पूर्ण यात्रा के दौरान प्रत्येक गुरुद्वारे में आवास, भोजन तथा स्नान एवं सफाई की अत्यंत सुन्दर व्यवस्था थी।

मेरा परिचय जानकर अधिकारियों ने मेरा विशेष ध्यान रखा।उन्होंने मुझे लाहौर घुमाने की व्यवस्था की। 18 अप्रैल को बोर्ड के कनिष्ठ अधिकारी मुझे पुराने शहर ले गये जो पुरानी दिल्ली जैसा है हमने वहां 'वच्छोवाली आर्य समाज' तलाशने की कोशिश की किन्तु सफलता नहीं मिली। वहां आर्य समाज का नाम ही किसी ने नहीं सुना था क्योंकि 70 वर्षों से अधिक आयु वाला वहां कोई व्यक्ति नहीं मिला। 19 अप्रैल को बोर्ड के सर्वोच्च अधिकारी (एफ.सी.एस.) स्वयं मुझे अपनी कार में बैठा कर लाहौर के दर्शनीय स्थान दिखाने ले गये। सर्वप्रथम हम शाही किला देखने गये, जिसकी बुनियाद महाराज लव ने रखी थी। किले में एक लव का मंदिर भी है, जिसे 'प्रेम का मंदिर' (टेम्पल ऑफ लव) भी कहा जाता है। बाद में किले का अधिकांश भाग मुगल सम्राटों ने बनवाया तथा अंत में इसका कुछ भाग अंग्रेजों ने बनवाया। तत्पश्चात् हम पाक मीनार देखने गये जिस पर 1940 में मुस्लिम लीग द्वारा पारित पाकिस्तान निर्माण का प्रस्ताव अंकित है। तत्पश्चात् हम अपनी यात्रा के सर्वाधिक महत्व पूर्ण स्थल डी.ए.वी. कॉलेज को देखने गये। सिविल लाइंस स्थित यह कॉलेज अब 'राजकीय इस्लामियां कॉलेज' के नाम से विख्यात है। सर्व प्रथम कॉलेज को देखकर मैं अत्यंत रोमांचित हो उठा था, जिसने देश को अनेक मूर्धन्य नेता, स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, वैज्ञानिक व कलाकार दिये, किन्तु बाद में मेरा मन तीव्र अवसाद से भर गया। काश! लाहौर भारत में होता! कॉलेज के मुख्य द्वार के दोनों ओर मंदिर नुमा ढांचे बने हुए हैं। अन्दर 'डी.ए.वी.' कॉलेज के निर्माण के लिए सफेद पत्थरों पर हिन्दी व अंग्रेजी में दान दाताओं की सूची अंकित है जिसमें अंकित अधिकांश हिन्दू नाम है। कॉलेज परिसर में यज्ञ वेदी के

..शेष पृष्ठ 5 पर

132वीं जयंती पर विशेष

अपना सर्वस्व भारत मां को समर्पित देश भक्त वीर सावरकर

जब भी हम देश भक्त भारत मां के सपूतों को याद करते हैं तो उनमें एक अग्रणीय नाम वीर विनायक दामोदर सावरकर का आता है, जिसने भारत मां की रक्षा के लिए एक नहीं अनेकों ऐसे कार्य किए जिसे जानकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अंग्रेजों द्वारा वीर सावरकर को कोल्हू में बैल के स्थान पर जोतकर तेल निकलवाने जैसी सजा की कल्पना मात्र से अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदा हो जाती हैं जिसे आज के सत्तासीन नेतागण क्या जाने? ***वीर सावरकर की वाणी में स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार स्पष्ट झलकते थे। वे जो भी कार्य करते थे वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों की प्रेरणा स्वरूप परिलक्षित होते थे। जिनका सविस्तार वर्णन मोपला व गौमान्तक नामक उपन्यासों से स्पष्ट होता है। ये दोनों उपन्यास वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड में उपलब्ध है।*** *आइए जाने क्या-क्या न किया हमारे वीर सिपाहियों ने भारत मां की आजादी की खातिर।* ***-सम्पादक***

जब हम देशभक्त महापुरुषों को याद करते हैं तो उनमें से एक अग्रणीय नाम वीर विनायक दामोदर सावरकर का आता है। सावरकर ने देश भक्ति के एक नहीं अनेको ऐसे कार्य किये जिससे यह देश हमेशा के लिए उनका ऋणी है। उनकी माता राधा बाई धन्य हैं जिसने वीर सावरकर जैसे निर्भीक, देश भक्त और धर्म वीर पुत्र को जन्म दिया था। वीरसावरकर अपनी माता के पुत्र तो थे ही परन्तु वह भारतमाता के भी अन्यतम पुत्र थे। वेदों में कहा है कि 'माता भूमि पुत्रो अहम् पृथिव्या:' अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं। वेद की इस सूक्ति का अर्थ समझने वाले भारत में बहुत कम लोग हैं। भूमि हमारी माता क्यों है, यदि इस पर विचार करें तो यह ज्ञात होता है कि माता के दुग्ध पान की ही तरह भूमि माता भी हमें अन्न, जल, निवास, वस्त्र, सुरक्षा, औषधि, बन्धु व बान्धवों से पूर्ण कर सुख व आनन्द प्रदान करती है। माता व पिता के जिन प्रजनन तत्त्वों से हमारा शरीर अस्तित्त्व में आता है वह भी हमारी प्रिय भूमि माता की ही देन है। भूमि माता के यदि उपकारों का चिन्तन करें तो हम पाते हैं कि हमारी माता के समान अथवा कुछ अधिक ही भूमि माता के हम पर उपकार हैं। अपनी माता का ऋण तो हम सेवा सत्कार कर कुछ चुका सकते हैं, परन्तु भूमि माता का ऋण तो किसी प्रकार से भी चुकाया नहीं जा सकता। भूमि माता के ऋण को चुकाने का केवल एक ही तरीका है और वह वही है जैसा महर्षि दयानन्द ने किया अर्थात् देशोपकार के कार्यों को करके। उन्होंने अपने सभी हितों व सुखों को देश व ईश्वर की प्रजा अर्थात् संसार के सभी मनुष्यों के सुख व हित के लिए बलिदान किया। इसी का कुछ अनुकरण देशभक्त वीरों ने किया जिन्होंने हसंते-हसंते फांसी के फन्दों को चूमा और देशभक्ति के अनेक कार्य किये तथा असीम दु:ख उठाये। यह आजादी किन्हीं एक या दो व्यक्ति या महापुरुषों की देन नहीं है अपितु महर्षि दयानन्द सहित अनेकों महापुरुषों व देशवासियों के देशभक्तिपूर्ण कार्यों का परिणाम है। देशों की इसी श्रृंखला में प्रथम पंक्ति के एक प्रमुख महापुरुष वीर सावरकर हैं जो देशभक्ति के अनेकानेक प्रात: स्मरणीय बलिदान की भावना से पूर्ण कार्यों को करके जीवित बलिदानी ही नहीं बने अपितु उन्होंने सैकड़ों क्रान्तिकारियों को बौद्धिक दृष्टि से तैयार कर भारत माता के ऋण को उतारा है। आईये, उनके जीवन की कुछ घटनाओं को स्मरण कर उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

वीर विनायक दामोदर सावरकर का बचपन का नाम तात्या था। आपका जन्म 28 मई, सन, 1883 को ग्राम भागूर जिला नासिक, महाराष्ट्र में हुआ था। घर में आपके माता-पिता और तीन भाई थे। घर में प्रतिदिन भगवती दुर्गा की पूजा होने के साथ रामायण व महाभारत की कहानियां भी बच्चों को सुनने को मिलती थी। महाराणा प्रताप व वीर शिवाजी के वीरतापूर्ण प्रसंग भी आपको माता-पिता से सुनने को मिलते थे। 10 वर्ष की आयु में आपकी माता राधा बाई का देहान्त हो गया। आप गांव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। बचपन में शस्त्र चलाने का अभ्यास भी करते थे। कुश्ती का शौक भी आपको हो गया था। इन्हीं दिनों आपके इलाके में प्लेग फैला। एक-एक करके बिना औषधोपचार के लोग मरने लगे। अंग्रेजों ने इस बीमारी की रोकथाम के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया जिससे सावरकर और क्षेत्र के लोगों में सरकार के प्रति रोष उत्पन्न हुआ।

इसी कारण चाफेकर बन्धुओं ने वहां के अंग्रेज कमिश्नर की हत्या कर दी। अंग्रेजों द्वारा मुकदमें का नाटक किया गया और इन वीर चाफेकर पुत्रों को फांसी दे दी गई। इससे व्यथित वीर सावरकर ने निर्णय किया कि इस अन्याय का बदला अवश्य लेंगे। बड़े होकर आप नासिक जिले के फर्ग्युसन कालेज में पढ़ने के लिए गये। यहां आपने **'मित्र-मेला'** नाम की देशभक्त युवकों की एक संस्था बनाई। इसका सदस्य बनने के लिए युवकों को यह घोषणा करनी पड़ती थी कि आवश्यकता पड़ने पर वह देश पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे। सभी सदस्य लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित देशभक्ति से पूर्ण समाचार पत्र **'केसरी'** व अन्य पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ते थे। महाराणा प्रताप व वीर शिवाजी की जयन्तियां भी आपके द्वारा मनाई जाती थी। 22 मार्च सन् 1901 को इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया का देहावसान हुआ। अंग्रेजों द्वारा देश भर में शोक मनाये जाने की घोषणा की गई। तात्या ने **'मित्र-मेला'** संगठन की बैठक बुलाई और उसमें भाषण दिया। आपने भाषण में कहा कि महारानी विक्टोरिया हमारे देशवासियों की शत्रु थी, उन्होंने हमें गुलाम बनाया हुआ है। हम उनके लिए शोक क्यों मनायें? समाचार पत्रों में इससे सम्बन्धित समाचार प्रकाशित होने से अंग्रेजों को इस घटना का पता चला और सावरकर को फर्ग्युसन कालेज से निकाल दिया गया। लोकमान्य तिलक को इस घटना का पता चलने पर उनके मुंह से निकला कि 'लगता है कि महाराष्ट्र में शिवाजी ने जन्म ले लिया है।' इसके बाद तिलक ने सावरकर को बुलाकर उनके शौर्य की प्रशंसा की।

देश के लोगों में देशभक्ति की भावना भरने के लिए तिलक जी के आशीर्वाद से वीर सावरकर ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का आन्दोलन चलाया जो अपेक्षा के अनुरूप सफल रहा। देश भर में स्थान-स्थान पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई जिससे देशवासी अंग्रेजों की गुलामी से घृणा करने लगे। इस पर लोकमान्य तिलक ने कहा कि "यह आग विदेशी साम्राज्य को भस्म करके ही दम लेगी।" बी.ए. पास करने के बाद आपने लन्दन जाकर वहां से वकालत करने का निर्णय लिया। 9 जून सन् 1906 को आप लन्दन के लिए रवाना हुए और वहां पहुंच कर महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य व क्रान्तिकारियों के आद्यगुरु तथा आर्य पण्डित की उपाधि से अलंकृत पण्डित श्याम कृष्ण वर्मा के इण्डिया हाउस में निवास किया जहां पहले से अनेक क्रान्तिकारी युवक रहा करते थे। यहां आकर आपने पहला काम अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत के इतिहास को पढ़ा। आप ने अपनी अन्तर्दृष्टि से जान लिया कि यह इतिहास पक्षपातपूर्ण है जिसमें भारतीयों से न्याय नहीं किया गया है। आपने भारतीयों का सच्चा इतिहास देशवासियों के सामने लाने का निर्णय लिया। आपने कुछ ही काल में कई पुस्तकों की रचना कर डाली। आपकी एक प्रमुख कृति 'सन् 1857 का भारत का प्रथम स्वातन्त्रय समर' है जिस पर प्रकाशन से पूर्व ही अंग्रेजों ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। प्रकाशन से पूर्व किसी पुस्तक पर प्रतिबन्ध की विश्व इतिहास की यह प्रथम घटना थी। विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को देश भक्ति की शिक्षा देने के लिए आपने सन् 1857 की क्रान्ति के स्मृति दिवस के अवसर पर इसके प्रमुख तीन अमर हुतात्माओं वीर कुवंर सिंह, मंगल पाण्डे तथा महारानी लक्ष्मी बाई को स्मरण करने का निर्णय किया और विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सुझाव दिया कि वह इस दिन अपने कोट पर एक बिल्ला लगायें जिस पर लिखा हो कि ''सन् 1857 की क्रान्ति के शहीदों की जय''। इस घटना से इंग्लैण्ड की सरकार चौंक गई और वीर सावरकर के विरुद्ध खुफिया निगरानी बढ़ा दी गई। मित्रों के परामर्श से वह वीर सावरकर को पेरिस से लन्दन वापस आते ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 15 सितम्बर, 1910 को उन पर मुकदमा चला और 23 जनवरी 1911 को उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया गया। कालापानी की सजा में वीर सावरकर को कोल्हू में बैल के स्थान पर जुतना पड़ता था और प्रतिदिन 30 पौंड तेल निकालना पड़ता था। बीच-बीच में गर्मी से लोग मूर्छित भी हो जाते थे। ऐसा होने पर कोड़ो से कैदियों की पिटाई होती थी। खाने की स्थिति ऐसी थी कि बाजरे की रोटी व स्वाद रहित सब्जी जिसे निगलना मुश्किल होता था। पीने के लिए पर्याप्त पानी भी नहीं मिलता था। दिन में भी शौच आने पर शौच की अनुमति नहीं मिलती थी और बात- बात पर गालियां दी जाती थीं। ऐसे यातना ग्रह में रहकर एक महान चिन्तक और देशभक्त ने 10 वर्षों तक जीवन व्यतीत किया। क्रान्तिकारियों के प्रयासों और आन्दोलनों के प्रभाव से 15 अगस्त 1947 को देश का विभाजन होकर स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। सावरकर की चेतावनी के बावजूद कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और मुसलिम के नेताओं ने देश का विभाजन स्वीकार किया। एक ओर आजादी के नशे में कांग्रेसी नेता दिल्ली की सड़कों पर झूम रहे थे वहीं दूसरी ओर बंगाल और पंजाब में हिन्दुओं के खून की होली खेली जा रही थी। जो हिन्दू और मुसलमान भाई भाई की तरह मिलकर रहते थे, वह अब एक दूसरे के खून के प्यासे हो चुके थे। इससे सावरकर का दिल टूट गया। सावरकर ने विभाजन के दु:ख को भुलाकर देश के शासको को आगाह किया कि देश की सीमाओं पर सेनाओं

...शेष पेज 6 पर

आर्य विद्यालयों की अध्यापिकाओं के लिए कार्यशाला आयोजित

21 मई (2015) को आर्य विद्या परिषद् की ओर से महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीपुर खामपुर में आयोजित कार्यशाला में विभिन्न आर्य विद्यालयों की अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

श्री रैली जी ने अध्यापिकाओं से बच्चों के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि माता-पिता को शिक्षक पर अपार विश्वास होता है, तभी तो वह अपनी संतानों को शिक्षा पाने के लिए उनके पास भेजते हैं ताकि वह शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन में बहुत कुछ कर सकें। यह भरोसा ही शिक्षक के दायित्व को बढ़ा देता है और उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने सम्पर्क में आने वाले विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के साथ-साथ नैतिक शिक्षा और व्यवहार कुशलता की भी पूरी शिक्षा दे जिससे विद्यार्थी अपने जीवन को सार्थक बनाता हुआ समाज व राष्ट्र के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हुआ अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठता हुआ, उस समाज व राष्ट्र की सेवा कर सके जिसने उसे अपने तप और बलिदान से उस विशिष्ट स्थान तक पहुँचाया है।

दो सत्रों में व्यवस्थित इस कार्यशाला में श्री रैली ने अध्यापिकाओं को अपना ज्ञान, कौशल व प्रतिभा को निरंतर बढ़ाते रहने, सकारात्मक दृष्टिकोण रखने सभी बच्चों के लिए समानता का भाव रखने, न्यायप्रिय रहने, व्यक्तिगत स्वार्थ से दूर रहने, पढ़ाई में कमजोर बच्चों पर विशेष ध्यान देने, समय पालन स्वयं करना व बच्चों को पालन करवाना और परमपिता परमात्मा में सच्ची श्रद्धा रखने जैसे अनेक बिन्दुओं को अपने निजी जीवन के अनुभवों के आधार पर समझाया। इस अवसर पर आर्य समाज शादीपुर खामपुर के प्रधान श्री भीमसेन कामराह जी ने इस कार्यशाला के आयोजन के लिए आर्य विद्या परिषद के अधिकारियों का धन्यवाद देते हुए सभी उपस्थित अध्यापिकाओं को कर्त्तव्य निष्ठ बनने के लिए कहा।

विश्व शांति एवं मानव कल्याण हेतु यज्ञ सम्पन्न

कोटा। विश्व शांति एवं मानव कल्याण की भावना से आर्यसमाज कोटा द्वारा विश्वकल्याण यज्ञ का आयोजन किया गया। जिला आर्य प्रतिनिधि कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की उपस्थिति में श्रीनाथपुरम् में शहीद सुभाष शर्मा डिप्टी कमाण्डेंट के आवास पर इस विशेष यज्ञ का आयोजन किया यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरहित्य में चारों वेदों के विशेष मंत्रों से आहुतियां प्रदान की गई। पं. श्योराज वशिष्ठ एवं पं. रघुराज आर्य ने सात्विक के कार्यों का निर्वहन किया। लेफ्टिनेंट क्षितिज शर्मा इस यज्ञ के मुख्य यजमान थे। शहीद सुभाष शर्मा की धर्मपत्नी बबीता शर्मा व उनके परिवार के सदस्यों व उपस्थिति अतिथियों ने यज्ञ में आहुति दी। यज्ञ कार्यक्रम में अनेक स्त्री एवं पुरुष उपस्थित थे। शांतिपाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

-अर्जुनदेव चड्ढा, जिला प्रधान

देश का उज्ज्वल भविष्य आर्यवीरों से -डॉ. महेश विद्यालंकार

देश के उज्ज्वल भविष्य व राष्ट्र निर्माण के लिए आर्यवीरों को आगे आना होगा। आज का युवा दिग्भ्रमित है, वैदिक संस्कारों से ही उन्हें सही दिशा दी जा सकती है। ये उद्गार डॉ. महेश विद्यालंकार ने प्रान्तीय आर्यवीर दल के साप्ताहिक 'चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा शिविर' डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, शालीमारबाग के दीक्षान्त समारोह में व्यक्त किये। समारोह में दिल्ली तथा समीपवर्ती क्षेत्रों के लगभग 300 नौजवानों ने भाग लिया। आर्यवीरों की परेड निरीक्षण का नेतृत्व श्री धर्मपाल आर्य सभा प्रधान व ध्वजारोहण श्री राकेश ग्रोवर ने किया। शिविर में एम.डी.एच.के श्री प्रेम अरोड़ा, स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, डॉ. महेश विद्यालंकार, स्वामी विदेह योगी, आचार्य ऋषिपाल, श्री बलदेव राज सेठ, श्री देवेन्द्र जावा, श्री विजय वर्मा व श्री प्रवीण बत्रा ने भी अपने-अपने विचार प्रकट किये। दीक्षान्त समारोह में ऋतिक आर्य, सर्वश्रेष्ठ आर्यवीर, धर्मवीर सर्वश्रेष्ठ शिक्षक व मोहित आर्य सर्वश्रेठ कैडेट सैनिक को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आर्य सन्सासी स्वामी प्रणवानंद सरस्वती प्रतिभाशाली आर्य वीर को सम्मानित करते हुए। साथ में संचालक जगबीर आदि।

प्रतिभाशाली शिविरार्थियों के साथ प्रेम अरोड़ा (एम.डी.एच.) डॉ. महेश विद्यालंकार संचालक जगबीर आर्य विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली सभा।

-चन्द्र मोहन आर्य

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 48वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उड़ीसा में आर्यों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना के 48वें वार्षिकोत्सव पर दो युवक ब्रह्मचारी अंकित कुमार एवं महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश व धर्म के लिए समर्पित कर दिया तथा स्व. चौधरी मित्रसेन आर्य की पुण्य समृति में स्वामी सुधानन्द सरस्वती, डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी (महाराष्ट्र), महात्मा चैतन्य मुनि (हिमाचल प्रदेश) का सम्मान किया गया। महोत्सव का शुभारंभ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ तथा ओमपताका के साथ हुआ। खरियार रोड नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण राज मंत्री श्री सुदर्शन भगत एवं स्थानीय विधायक श्री बसंत भाई पंडा भी महोत्सव में जनता को संबोधित करने के लिए पधारे।

-डॉ. कुंजदेव मनीषी

आर्य समाज (वेद) मंदिर उद्घाटन समारोह सम्पन्न

10 मई 2015, आर्य समाज राजगांव (रायगढ, छत्तीसगढ़) में नवनिर्मित आर्य समाज वेद मंदिर के उद्घाटन के तत्त्वावधान में दो दिवसीय ग्यारह कुंडीय महायज्ञ एवं दिव्य भक्ति सत्संग चतुर्वेद शतकम परायण यज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य दया सागर, श्री दिव्येश्वर शास्त्री थे जिनके कुशल नेतृत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ व उपस्थित जनों ने यज्ञोपरांत नशापान, अभक्ष्य पदार्थ आदि छोड़ने का संकल्प लिया व भक्ति सत्संग का आनन्द लिया। समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती संचालक गुरुकुल आश्रम आमसेना, अध्यक्ष श्रीमती सुनीति सत्यानंद राठिया विधायक लैलूंगा विधान सभा क्षेत्र, सारस्वत अतिथि आचार्य दया सागर पूर्व प्रधान छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा रायपुर, श्री जीवर्धन शास्त्री मंत्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली थे। आर्य समाज मंदिर निर्माण व उक्त समारोह को सम्पन्न कराने में श्री प्रहलाद आर्य का विशेष योगदान रहा।

-टेकाराम आर्य, मंत्री

पृष्ठ 1 का शेष **अंतर्राष्ट्रीय आर्य ...**

क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ इस विषय में चर्चाएं की एवं अपने अनुभव को सांझा किया। इस यात्रा से दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में होने वाले इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लेकर भारी उत्साह है। इस सम्मेलन से न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के अनेक शहरों में आर्य समाज की गतिविधियों को विस्तार मिलेगा, ऐसी आशा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के प्रधान श्री जगदीश चन्द्र जी ने विश्व के समस्त आर्यजनों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों एवं अन्य आर्य संगठनों को सिडनी पधारने का हार्दिक आमंत्रण दिया।

ज्ञातव्य है कि भारत में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सन् 2006 के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विश्व की आर्य समाजों को गति देने, विश्व की सभी आर्य समाजों को संगठित करने की दृष्टि से भारत के बाहर भी आर्य महासम्मेलन करने की योजना बनाई थी। वैसे तो यह योजना बहुत पहले बनी थी तथा 1927 से प्रारंभ हो गयी थी, अपरिहार्य कारणों से बीच में यह क्रम रुक गया था।

किन्तु पुनः यह निर्णय लिया तथा 2006 में तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य व उनके पश्चात् आचार्य बलदेवजी के नेतृत्व में यह क्रम निरन्तर चल रहा है। 2006 में भारत, फिर अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हालैण्ड, फिर 2012 में भारत, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर, बैंकॉक, थाईलैण्ड में सम्पन्न हो चुके, अब 27, 28, 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया में होने जा रहा है।

उसी सन्दर्भ में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा फिजी देश की अनेक आर्य समाजों, आर्यजनों से चर्चा करने तथा संगठित होकर सम्मेलन को भव्य स्वरूप देने की भावना से इन देशों की यात्रा की गई। इसमें मैं, तथा श्री विनय आर्य और सिडनी से श्री योगेश कुमार आर्य आस्ट्रलिया द्वारा इन देशों में जनसम्पर्क किया गया। श्री योगेश आर्य को इस सम्मेलन का संयोजक बनाया गया है।

आस्ट्रेलिया में महासम्मेलन की पूर्व तैयारी हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल दिनांक 2/5/2015 को दिल्ली से प्रातः आकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड) हेतु रवाना हुआ। आकलैण्ड में शाम को करीब 6 बजे पहुंचे, वहां आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक थी।

वैदिक सैंटर ऑकलैण्ड में बैठक करते श्री लवराज कुमार प्रकाश राय एवं अन्य

मेलबर्न के अधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा के अधिकारी

न्यूजीलैण्ड में भजन प्रस्तुत करते श्री प्रकाश आर्य जी

सिडनी आर्य समाज के अधिकारियों को साहित्य भेंट।

ब्रिसबेन आर्य समाज के प्रधान श्री जितेंद्र देव को साहित्य भेंट

फीजी में पंडित गुरुदत्त, पंडित भुवनदत्त, डॉ. राघवा जी एवं अन्य को साहित्य भेंट

आर्य प्रतिनिधि सभा न्यूजीलैंड (INC) के अधिकारियों प्रधान श्री हवन सुंदर एवं श्री प्रवीण सिंह आदि को साहित्य भेंट

वहां पहुंचकर सत्संग किया, जिसमें यज्ञ-प्रवचन व भजन का आयोजन किया गया था।

2 रात्रि श्री प्रकाश जी राय, जो एक बड़ी सूझबूझ वाले तथा कर्मठ व्यक्ति हैं, उनके निवास पर ठहरे। इस बीच आर्य महा सम्मेलन को लेकर तीन बैठकें हुई, इसके पश्चात् सम्मेलन के प्रति सब में जागरूकता आयी। कई सुझाव दिये गये तथा आस्ट्रेलिया के साथ पूर्ण

...शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 2 का शेष **मेरी पाकिस्तान ...**

गौरी शंकर भारद्वाज जी बचपन से ही आर्य समाजी परिवेश में पले-बढे। आर्य समाज की सेवा के साथ-साथ वे दिल्ली की राजनीति में भी समाज सुधार के उद्देश्य से उतरे और दिल्ली के शकूरपुर बस्ती में विधायक पद पर आसीन होकर समाज की खूब सेवा की व जन-जन के हितैषी बने। वर्तमान में आप देश-विदेश में जा-जाकर वहां के आर्य समाजों की स्थिति का अवलोकन करके उन्हें विस्तारित करने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं। आपकी पाकिस्तान यात्रा भी इसी उद्देश्य से परिपूर्ण थी।

-सम्पादक

अवशेष भी हैं। तत्पश्चात् हम लाहौर के प्रख्यात बाजार अनारकली गये यह दिल्ली के चांदनी चौक जैसा ही है किन्तु चांदनी चौक से कम चौड़ा और अधिक लम्बा है। यहां कपड़ों, जेवरातों, जूतों तथा एक ओर रेस्टोरेंट व खाने-पीने की दुकाने हैं। यहां हमने आर्य समाज अनार कली का महान 'आर्य समाज मंदिर' देखा, हृदय असीम श्रद्धा से परिपूर्ण हो गया। तत्पश्चात् हम 'शहीद भगत सिंह चौक' देखने गये। इसी स्थल पर स्वतंत्रता संग्राम के पराक्रमी योद्धा, अमर शहीद भगत सिंह को फांसी दी गयी थी। पाकिस्तान सरकार ने कुछ समय पहले ही अधिकृत तौर पर इस स्थल का नाम 'शहीद भगत सिंह' चौक घोषित किया है। मैं और पाक अधिकारी श्रद्धा से नतमस्तक होकर खड़े रहे तत्पश्चात् हमने सचिवालय, विधान सभा भवन, हाई कोर्ट,सर गंगाराम अस्पताल एवं आधुनिक मॉल देखे।

हमने अपने सम्पूर्ण पाक प्रवास में पाकिस्तान के जन-मानस के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं का गहनता से अध्ययन किया और पाया कि पाकिस्तान के जन सामान्य जनों में भारत के लोगों के प्रति कोई कटुता नहीं है,अपितु भारी उत्सुकता, सद्भावना, सौहार्द व मेल-मिलाप की भावनाएं हैं।

केवल एक पुलिस अधिकारी ने मुझ से शिकायत भरे स्वर में कहा था कि हिन्दुतान ने हमारी नदियों में आने वाला पानी रोक लिया है जिससे हमारी नदियां सूखी पड़ी हैं इस कारण हमारी खेती को बहुत नुकसान हो रहा है। वास्तव में भारत-पाक वैमनस्य की जड़ पाक के राजनीतिज्ञ, मुल्ला-मौलवी तथा सेना है। 20 अप्रैल को लगभग 11 बजे हम अटारी बॉर्डर पर वापस आ गये। पाक के धार्मिक मामलों के मंत्री व वरिष्ठ अधिकारी अटारी तक हमें बिदा करने आये। इस प्रकार आर्य समाज के अतीत के गौरवशाली स्थलों को देखने का अविस्मरणीय अवसर प्राप्त हुआ। मैं आर्यों को आह्वान करता हूं कि वे पाक जाकर आर्य समाज की गौरव पूर्ण झांकी अवश्य देखें।

-गौरी शंकर, भारद्वाज

पृष्ठ 5 का शेष **अंतर्राष्ट्रीय आर्य ...**

सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। 5/5/2015 की सुबह 6 बजे आकलैण्ड से मेलबर्न (आस्ट्रेलिया) रवाना हुए। वहां पहुंचते ही दिनेशफल आर्य समाज के प्रधान हमें लेने आए। वे हमें भारतीय मूल निवासी आदित्य के यहां ले गये, वहीं तीन दिन ठहरे। शाम को आर्य समाज में बैठक का आयोजन था। वहां यज्ञ, भजन, प्रवचन के पश्चात् आर्य महासम्मेलन के संबंध में बैठक रखी गयी। काफी देर इस विषय पर तथा आर्य समाज के संगठन को लेकर एक सार्थक चर्चा हुई, बैठक में अच्छी उपस्थिति थी। दूसरे दिन पण्डित प्रशान्त के यहां चर्चा रखी गयी। तीसरे दिन दिनांक 8/5/2015 शाम को दिनेशफल जी के यहां बैठक रखी और लम्बे समय तक आर्य समाज के संगठन व महासम्मेलन पर चर्चा हुई। अनेक प्रश्न-उत्तर पूछे, कई शंकाएं संगठन को लेकर थीं उनका निवारण हुआ। सभी ने सम्मेलन में पूरा-पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। सहयोग के लिए आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा को 3,000/- डालर भी प्रारंभिक सहयोग के रूप में दिये।

यहां आर्य समाज का भवन नहीं है, चर्चा के पश्चात् एक उत्साहवर्धक वातावरण बना और इस हेतु शीघ्र ही भवन बनाने की योजना बनी।

दिनांक 8/5/2015 की सुबह ब्रिसबेन पहुंचे। शाम को आर्य समाज का सत्संग व सम्मेलन पर चर्चा होनी थी। यहां आर्य समाज का अपना भवन है और तीन एकड़ भूमि रिक्त पड़ी है, शहर के पास ही यह स्थित है। लगभग 80-90 व्यक्ति एकत्रित हुए थे। यज्ञ, भजन, प्रवचन के पश्चात् महासम्मेलन की विस्तृत चर्चा हुई। सभी में बहुत उत्साह देखा गया। यहां के सदस्य सम्पन्न और बड़े कर्मठ तथा संगठित हैं। भवन के आगे बड़ा निर्माण करने की योजना बनाई गयी।

सभी ने सम्मेलन में सहयोग का आश्वासन दिया तथा अच्छी मात्रा में धन का सहयोग करने का भी आश्वासन दिया।

दूसरे दिन प्रात: फिर श्री सुखबीर सिंह जी के निवास पर बैठक आयोजित की गयी। प्रात: बैठक में प्रमुख व्यक्ति उपस्थित हुए व सम्मेलन की विस्तृत चर्चा की गई, कई सुझाव भी दिये और सभी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इसके पश्चात् दोपहर ब्रिसबेन से सिडनी हेतु रवाना हुए।

दिनांक 9/5/2015 को सिडनी पहुंचे, श्री योगेश आर्य के निवास पर रुके, सिडनी आर्य समाज द्वारा शहर से करीब 25 कि. मी. दूर एक विस्तृत स्थान 5 एकड़ का खरीदा है। उसमें आर्य समाज भवन बनाया है जिसमें करीब 200 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है। स्थान बड़ा सुन्दर और खुला है। वहां सत्संग हुआ और उसके पश्चात् भजन और प्रवचन करवाए। सम्मेलन के संबंध में जानकारी दी। श्री विनय आर्य ने सम्मेलन के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा वर्तमान में क्या कर रही है, आगे क्या करना है, इस संबंध में जानकारी दी।

सम्मेलन के संबंध में एक अच्छा वातावरण बना, सभा के प्रधान श्री जगदीश जी व उपप्रधान श्री प्रमोदजी राय तथा कार्यकर्ताओं ने इस सम्मेलन को भव्य बनाने का संकल्प लिया।

दिनांक 11/5/2015 की रात्रि में फिर एक बैठक सम्मेलन को लेकर आयोजित की गयी। इसमें युवा संगठन को तथा अन्य सनातनधर्मी (पौराणिकों) तथा विश्व हिन्दू परिषद के डॉ. निहाल सिंह भी उपस्थित हुए थे जिसमें नवयुवक भी उपस्थित हुए थे। युवा सम्मेलन का विचार किया गया। सभी इस आयोजन के प्रति अति उत्साहित हुए। दिनांक 12/5/2015 की प्रात: फिजी के लिए रवाना हुए। वहां डॉ. राधवा हमें लेने आए थे। वहां से आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय, जो केन्द्रीय कार्यालय है, गए। रात्रि करीब 7.30 बजे वहां पहुंचे, बैठक वहीं रखी गयी थी। करीब 10 बजे तक बैठक चली। बैठक में वहां के पदाधिकारी और पण्डित तथा पण्डिताओं ने भाग लिया। प्रमुख रूप से श्री भुवनदत्त जी जो काफी सक्रिय व वरिष्ठ हैं तथा सभा के प्रचारक पण्डित गुरुदत्त जी, डॉ. राधवा आदि उपस्थित थे। संभवत: वर्षों पश्चात् फिजी सभा की सार्वदेशिक सभा से इस प्रकार गंभीर व विस्तृत चर्चा हुई। सार्वदेशिक की वर्तमान गतिविधि व आगामी योजना पर सभी ने वहां आश्चर्य व हर्ष व्यक्त किया।

सम्मेलन को सफल बनाने हेतु सभी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सहयोग देने का पूर्ण आश्वासन दिया। इसी यात्रा के मध्य आर्य नेता कमलेशजी आर्य से उनकी व्यस्तता और समयाभाव के कारण भेंट नहीं हो सकी, यद्यपि श्री कमलेशजी स्वयं इस हेतु एयरपोर्ट पधारे थे किन्तु ठीक से जानकारी न होने के कारण भेंट न हो सकी। किन्तु फोन पर लम्बी चर्चा हुई, उन्होंने पूरी तरह सम्मेलन की सफलता हेतु आश्वस्त किया। दिनांक 13/5/2015 को प्रात: अपनी कार में फिजी सुवा स्थित स्कूल, कॉलेज, बाल आश्रम दिखलाए। फिजी में देखकर इतना कुछ होना आश्चर्य ही लग रहा था। करीब 35 संस्थाएं आर्य समाज की चलाई जा रही है। फिजी अत्यन्त शान्त प्राकृतिक सुन्दरता से पूर्ण समुद्र, पहाड़, हरियाली की सुन्दरता का बेमिसाल उदाहरण है। सभी सदस्य सौम्य व सहयोगी प्रवृत्ति के लगे। यद्यपि इस यात्रा का समय 12 दिवस था लम्बी यात्रा थी किन्तु यह भी बहुत कम रहा। वहां के आर्यों से मिलकर वहां की स्थिति को जब जाना तो लगा कि सार्वदेशिक का संगठनात्मक यह कार्य बहुत पहले से प्रारंभ हो जाना था। यदि ऐसा हुआ होता तो आज विदेशों में आर्य समाज की अपनी पहचान होती।

यात्रा अत्यन्त व्यस्त जिसमें कई दिनों की नींद भी 2 से 3 घण्टे तक रही, थका देने वाली रही, परन्तु सार्थक रही। एक दिन में 2 से 4 मीटिंगें हुई। कई सौ व्यक्तियों से मिलें। जहां-जहां गये वहां से संगठन के प्रति विश्वास, नया उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ। नई आर्य समाजों की स्थापना का भी आश्वासन मिला। उन्हें जिस मार्गदर्शन व सहयोग की अपेक्षा थी वह उन्हें मिला, बड़े संगठन के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का आश्वासन उनसे हमें मिला। कई अच्छे कर्मठ आर्यजनों से सम्पर्क हुआ, जो संगठन हित में रहेगा। एक-दूसरे को समझने का अवसर मिला, विश्वास बढ़ा। भारत में सम्मेलन को देख वहां अनेक सदस्य दुविधा में थे कि वे इतना बड़ा कार्य कैसे कर सकेंगे। उन्हें किसी बड़े कार्यक्रम का अनुभव नहीं था। चाहते हुए भी सम्मेलन करने, न करने की दुविधा में थे। किन्तु विस्तृत चर्चा व मन में उठे प्रश्नों की शंका समाधान और सार्वदेशिक सभा के द्वारा सहयोग व मार्गदर्शन की चर्चा से उनमें आत्म विश्वास का संचार हुआ। सभी सदस्य सम्मेलन के लिए पूर्ण मन से जुट गए। यह यात्रा आर्य समाज के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

श्री योगेश कुमार आर्य का पूरे 12 दिन साथ रहते हुए, अत्यन्त सराहनीय सहयोग रहा। निश्चित रूप से आस्ट्रेलिया में आयोजित यह सम्मेलन न केवल आस्ट्रेलिया अपितु न्यूजीलैण्ड और फिजी देशों के लिए भी चेतना प्रदान करने वाला होगा।

यही ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' की ओर बढ़ते कदमों का एक सार्थक प्रयास है।

-प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

संस्कृत अकादमी व वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालय, दिल्ली का संयुक्त समारोह सम्पन्न

'संस्कृत' भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है, जिसे अधुनातन रूप देने के लिए नये विषयों का मौलिक लेखन तथा अनुवाद आवश्यक है। यूरोप, अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भारत मूल के लगभग 2 करोड़ रोमा रहते हैं जिनकी मातृभाषा रोमानी हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी है। एक हजार वर्ष पूर्व भारत छोड़कर गये इन भारतवंशियों ने अपनी भाषा में संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं का प्रयोग जीवित रखा है।' उक्त विचार अंतर्राष्ट्रीय रोमा संस्कृतिक विश्वविद्यालय (बेलग्रेड) सर्बिया गणराज्य के कुलाधिपति पद्मश्री प्रो. डॉ. श्याम सिंह शशि ने दिल्ली सरकार की संस्कृत अकादमी व वेद व्यास डी. ए.वी. पब्लिक विद्यालय, विकासपुरी, दिल्ली के संयुक्त समारोह में व्यक्त किये। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष डॉ. शशि ने बताया कि इस वर्ष भारत सरकार के सहयोग से रोमा विश्व सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। समारोह के संयोजक श्री हरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि डॉ. शशि हिन्दी-अंग्रेजी में 400 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं तथा उन्होंने 75 देशों में शोध यात्राओं के साथ-साथ अपने लाखों पाठकों तक भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत का संदेश पहुंचाया है। विद्यालय सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह में डॉ. धर्मपाल, डॉ. महेश वेदालंकार, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार,डॉ. एस.के. शर्मा इत्यादि ने अपने वक्तव्य दिये तथा दिल्ली व अन्य प्रदेशों के संस्कृतिक प्राध्यापक व विद्वानों ने भाग लिया।

पृष्ठ 3 का शेष **भारत मां को...**

को नियुक्त करें जिससे पाकिस्तान से सम्भावित आक्रमण होने पर उसका मुकाबला किया जा सकेगा। सावरकर के इस सुझाव की हमारे शासकों ने अनदेखी की जिसका परिणाम कुछ महीनों बाद पाकिस्तान के काश्मीर पर आक्रमण के रूप में सामने आया और उसने हमारा बहुत बड़ा भूभाग अपने अधीन कर लिया।

इस कश्मीर अतिक्रमण का देश के प्रथम गृह मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल और हमारे बहादुर सैनिक पाकिस्तान के घुसपैठियों को करारा जवाब दे रहे थे कि यकायक नेहरू ने युद्धविराम की घोषणा कर दी और अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय लेकर मामले के शान्तिपूर्ण हल के लिए उसे संयुक्त राष्ट्र में ले गये। हमने सन् 1948 से अब तक काश्मीर में अपने हजारों व लाखों सैनिक गंवा दिये व हमारे काश्मीरी हिन्दू भाईयों को वहां से विस्थापित होना पड़ा परन्तु अभी भी हमारे राजनैतिक नेता पाकिस्तान के स्वरूप, स्वभाव व चरित्र को समझे नहीं है। काश्मीर की समस्या के चलते भी भारत की ओर से उसे करोड़ों रुपयों का अनुदान दिया गया। देश के विभाजन और काश्मीर पर पाकिस्तान के कब्जे से वीर सावरकर निराश हो चुके थे परन्तु कांग्रेस में आशा की एकमात्र किरण सरदार पटेल थे।

उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से भारत में अवस्थित लगभग 600 स्वतंत्र रियासतों का भारत में विलय कराया जिसमें हैदराबाद की रियासत भी शामिल है जो खुलेआम पाकिस्तान में विलय के पक्ष में थी। सरदार पटेल ने रातों रात हैदराबाद में सैनिक कार्यवाही कर वहां के निजाम को गिरफ्तार कर उससे अपनी सभी शर्तें मनवाकर उसका भारत में विलय कराया। अन्य सभी रियासतों के राजाओं से भी भारत में विलय के संधि-पत्रों पर लौह पुरुष सरदार पटेल ने हस्ताक्षर कराये। सरदार पटेल के इस दूरदर्शिता एवं शौर्यपूर्ण कार्य के लिए सारा देश व इसकी वर्तमान एवं भावी सन्तानें व वीर सावरकर ने सरदार पटेल की इस सफलता के लिए उन्हें बधाई सन्देश भेजा और 26 फरवरी 1966 को भारत माता का यह अन्यतम पुत्र अपनी देह को छोड़ स्वर्ग सिधार गया।

-मनमोहन कुमार आर्य

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष

पर्यावरण सन्तुलन के बदलते आयाम

*तेजी से बढ़ती हुई आबादी एवं उपभोग प्रधान संस्कृति की भूख ने प्राकृतिक सम्पदा का अंधाधुंध दोहन किया है, जो निरंतर जारी है, अब प्रकृति ने इसका परिणाम देना शुरू किया है। पर्यावरण प्रदूषण का संकट अब विकराल रूप धारण कर रहा है। अब शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन और कर्ण प्रिय ध्वनि की कल्पना करना बेमानी होगी। पर्यावरण संकट के कारण मानव का भविष्य खरतनाक मोड़ पर आ गया है। नई-नई बीमारियों जैसे डेंगू, इन्सेफेलाईटिस, आन्त्रशोध से लाखों लोग असमय ही मर रहे हैं। आज समूचा वातावरण प्रदूषित हो गया है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ समाजिक सम्बन्ध के टूटते ताने-बाने, विश्वास का संकट, गिरते मूल्य के कारण सामाजिक प्रदूषण भी मंडराने लगा है। -**सम्पादक***

पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण में अनेक प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुएं, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी तथा अनेक सामजिक नियम आते हैं जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण उन सभी दशाओं का योग है जिसने प्राणियों के जीवन को प्रभावित किया है। पर्यावरण शब्द परि और आवरण से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ चारों ओर और आवरण का अर्थ ढंके हुए है। पर्यावरण का अर्थ उन सभी दशाओं और परिस्थितियों से है जो एक प्राणी के जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। इस दृष्टिकोण से किसी भी जीवित वस्तु के अस्तित्व पर जिन दशाओं का प्रभाव पड़ता है वह सब पर्यावरण के अंग हैं। मनुष्य के लिए पर्यावरण का महत्व और भी अधिक है।

मानव अपनी विभिन्न क्रियाओं के द्वारा अपनी सुख सुविधाओं के लिए आधुनिक औद्योगिक वातावरण का सृजन करके अपने विकास का मापदण्ड प्रस्तुत कर रहा है। विश्व में पर्यावरण क्रान्ति संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा स्टॉक होम में 1972 में आयोजित मानव पर्यावरण विषय पर किये गये सम्मेलन की संस्तुति से संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा शुरू की गयी। भारत सरकार ने 1972 में राष्ट्रीय पर्यावरण समिति का गठन किया तथा 1 नवम्बर 1981 को विश्व पर्यावरण नीति निर्धारित की गयी। पर्यावरण की सुरक्षा की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए सम्पूर्ण विश्व में 5 जून के दिन पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

जहां आज मानव ने आस-पास फैले प्राकृतिक पर्यावरण को तोड़ा है वहीं पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं ने जन्म लिया है। पर्यावरण प्रदूषण का विस्तृत अर्थ दूषित हो रही हवा, पानी, मिट्टी, दलदल, रेगिस्तान व बीहड़ों का बढ़ना,नदियों का बरसात में उफनकर बहना और गर्मी में सूख जाना, जंगलों को ध्वस्त करने से लेकर पेयजल का संकट, गन्दे पानी की निकासी जैसी समस्याएं सम्मलित हैं। तेजी से बढ़ती हुई आबादी एवं उपभोग प्रधान संस्कृति की भूख ने प्राकृतिक सम्पदा का अंधाधुंध दोहन किया है, जो निरंतर जारी है, अब प्रकृति ने इसका परिणाम देना शुरू किया है। पर्यावरण प्रदूषण का संकट अब विकराल रूप धारण कर रहा है। अब शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन और कर्ण प्रिय ध्वनि की कल्पना करना बेमानी होगी। पर्यावरण संकट के कारण मानव का भविष्य खरतनाक मोड़ पर आ गया है। नई-नई बीमारियों जैसे डेंगू, इन्सेफेलाईटिस, आन्त्रशोध से लाखों लोग असमय ही मर रहे हैं। आज समूचा वातावरण प्रदूषित हो गया है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ समाजिक सम्बन्ध के टूटते ताने-बाने, विश्वास का संकट, गिरते मूल्य के कारण सामाजिक प्रदूषण भी मंडराने लगा है।

भारत में विश्व की कुल भूमि का केवल 2.4 प्रतिशत भाग ही है जबकि विश्व की जनसंख्या का कुल 14 प्रतिशत यहां निवास करता है जिसमें प्रतिवर्ष 1 करोड़ 2 लाख से अधिक लोग और जुड़ जाते हैं। जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ स्वच्छता की समस्या भी पैदा हुयी है। बड़े-बड़े शहरों में मल-मूत्र, कूड़ा-कचरा, कारखानों की राख व रासायनिक गैसें तेजी से निकलती हैं, जिससे जलवायु, पृथ्वी भी प्रदूषित होने लगती है।

पर्यावरण जल, वायु, ध्वनि तथा भूमि प्रदूषण को देखते हुए 'विश्व 2000' नामक अमेरिका के राष्ट्रपति ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था कि ''यदि पर्यावरण प्रदूषण को नियन्त्रित नहीं किया गया तो सन् 1930 तक तेजाबी वर्षा, भुखमरी और प्रदूषण का ताण्डव नृत्य होगा और मानवता का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।'' राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कथन है कि ''प्रकृति हम सबकी आवश्यकता को पूर्ण कर सकती है परन्तु किसी का लालच नहीं।'' यह कथन चेतावनी की ओर इंगित करता है। हमारे मानव जीवन को प्रभावित करने वाले चारों ओर उपस्थित जड़ और चेतन पदार्थ का सामूहिक नाम पर्यावरण हैं जिस हवा में हम सांस लेते हैं जिस भूमि पर हमारा आवास है वह सब पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। वस्तुत: स्वस्थ पर्यावरण प्राणि मात्र को स्वस्थ्य एवं खुशहाल रखने में सहायक होता है।

प्रकृति के प्रमुख घटकों मानव, वनस्पति एवं मानवेत्तर प्राणियों में सन्तुलन रहना ही पर्यावरण संरक्षण है। हमें विश्व में वायु, जल, स्थलीय, रेडियोधर्मी, ध्वनि, जैव एवं इलैक्ट्रॉनिक प्रदूषण प्रमुख रूप से मिलते हैं। वायु, जल, मृदा, ध्वनि एवं रेडियाधर्मी प्रदूषणों द्वारा गम्भीर पर्यावरणीय समस्याएं जन्म लेती हैं।

अत: पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है। आवश्यकता वैज्ञानिक व उद्योगों के विकास को रोकना नहीं है, अपितु निकलने वाले दूषित पदार्थों को ठिकाने लगाने की है। पर्यावरण के प्रति जन चेतना जगानी होगी। इसके लिए स्वयं सेवी संगठनों, सामाजिक कार्यकत्ताओं, सरकारी अधिकारियों आदि की पर्यावरण प्रदूषण समितियां गांवों से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर गठित किये जाने की आवश्यकता है।

अत: हम सभी नागरिकों का कर्त्तव्य है कि वह इससे उत्पन्न भयावह दुष्परिणामों को समझें व इसके निराकरण हेतु अपने दायित्वों को पूरा करने का संकल्प लें।

-डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी, प्रोफेसर,
राजकीय महाविद्यालय, कैंपियरगंज
(गोरखपुर)

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'' - सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

176. श्रीचंद सोलंकी	11000/-
177. महाशय ईश्वर सिंह	10000/-
178. राजबीर सोलंकी	5100/-
179. सतपाल हलवाई	5100/-
180. रिचा सोलंकी	2100/-
181. डॉ. मुकेश आर्य (मंत्री)	2100/-
182. सुरेन्द्र सहारण	2100/-
183. मा. उमराव शर्मा	5100/-
184 प्रदीप छिक्कारा	2100/-
185. मा. प्रताप सोलंकी	1100/-
186. डॉ. जयराम यादव (प्रधान)	2100/-
187. डॉ. आर.के. सहरावत	101/-
188. राजपाल	101/-
189. विजय	51/-
190. रामभगत सोलंकी	100/-
200. राजबीर सहरावत	200/-
201. मोनू बागडोला	500/-
202. श्याम सुंदर सोलंकी	1100/-
203. राजेश सैनी	200/-
204. सुरेंद्र सोलंकी	100/-
205. निशान	1100/-
206. शंकर मिस्त्री	100/-
207. नन्द सिंह सैनी	500/-
208. राजेश सैनी भट्टेवाला	500/-
209. बालीराम सोलंकी	500/-
210. नेत्रपाल सोलंकी	1100/-
211. राजवती पांचाल (उपप्रधान)	500/-
212. ओमदत्त पांचाल	1100/-
213. लोकेश आर्य (उप मंत्री)	500/-
214. सतीश लांबा	1100/-
215. कृष्णा लांबा	500/-
216. वीरमती सोलंकी	500/-
217. राजवती धामा	1100/
218. कमला मौसी	500/-
219. वीरेंद्र सोलंकी	1100/-

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। -महामंत्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक: 18 से 28 जून 2015

स्थान: एस.एम.आर. पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली।

उद्घाटन: बृहस्पतिवार 18 जून सायं 5 बजे, **समापन:** रविवार 28 जून प्रात: 10-01.00 बजे

साध्वी डॉ. उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**अंजली कोहली**
प्रधान संचालिका	संचालिका	प्रधानाचार्या
मो. 08750482498	मो. 9810702760	मो. 09818110244

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

08 जून से 14 जून, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11 जून/12 जून, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 10 जून, 2015

'ब्रह्ममेधा' ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं सामवेद बृहद्यज्ञ

'ब्रह्ममेधा' ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं सामवेद बृहद्यज्ञ, बहादुरगढ झज्जर हरिणाया में दिनांक 22 से 28 जून 2015 आयोजित होगा। यज्ञ ब्रह्मा-पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज द्वारा सम्पन्न होगा।

कार्यक्रम - शिविर उद्घाटन 22 जून सायं 4 बजे, ध्यान योग साधना, आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण 23 जून प्रातः 5 बजे से
7.30 बजे से यज्ञ भजन उपदेश, 11 बजे से योग दर्शन स्वाध्याय, सायं 6 बजे से साधना रात्रि 8.30 से शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन।

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर, कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आएं। भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी।

निवेदक - स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, मुख्याधिष्ठाता,मो. 09416054195

प्रतिष्ठा में,

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस समारोह

समर्पण शोध संस्थान साहिबाबाद (गाजियाबाद) उ.प्र. के तत्वावधान में आर्य जगत के गौरव एवं संस्थापक, मूर्धन्य सन्यासी विद्यामार्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 14 जून 2015 को संस्थान परिसर में किया जा रहा है।

-श्री श्रद्धानन्द शर्मा प्रधान, श्री राजेन्द्र भटनागर सचिव

आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जीन्द)हरियाणा में दिनांक 15 से 21 जून 2015 तक आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

नोट - शिविरार्थी अपने साथ कॉपी,पेन, खाकी निकर, सैण्डो बनियान 2, तौलिया, कच्छा, लाठी, टार्च साथ लेकर आएं। पंजीकरण शुल्क 100/-

निवेदक - आचार्य बलदेव जी महाराज, संरक्षक मो. 09466013563, 09050043612, 0890174063

वार्षिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह गुरुकुल कुरुक्षेत्र में होगा

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 3 से 5 जुलाई 2015 को आयोजित होगा। सम्मेलन में दो वृद्ध भजनोपदेशकों का अभिनन्दन किया जायेगा।

निवेदक-श्री सत्यपाल मधुर, मो.09899351375

चुनाव समाचार

आर्य समाज 'शहर' सोनीपत

प्रधान -श्री सुभाष चांदना
मंत्री -श्री प्रवीण आर्य
कोषाध्यक्ष -श्री दीपक तलवार

आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली

प्रधान -श्री प्रकाश चन्द्र आर्य
मंत्री - श्री पवन गांधी
कोषाध्यक्ष - श्री ओम प्रकाश चावला

आर्य समाज सुंदर विहार, नई दिल्ली

प्रधान -श्री कंवर भान क्षेत्रपाल
मंत्री - श्री अमर नाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष - श्री प्रहलाद सिंह

शोधकार्य हेतु निवेदन

प्रिय पाठकों, श्री सुभाष अग्रवाल अपनी फिल्मों के माध्यम से आर्य जगत की निरंतर सेवा करते आ रहे हैं अब एक शोधकार्य (पीएच. डी) ''हिंदी भारतीय पत्रकारिता और हिंदी भाषा को महर्षि दयानंद और आर्यसमाज का योगदान'' विषय पर कर रहे हैं। आप सभी महानुभावों से अनुरोध है की यदि आपकी जानकारी में कोई ऐसा आर्यसमाजी लेखक या पत्रकार हो जिनका कार्य इस शोध में आने योग्य हो, साथ ही अपने क्षेत्र के अपने समय के पुराने या अभी चलने वाले पत्र पत्रिकाओं के नाम व अन्य जानकारी भेजने की कृपा करें। जिससे हम उन्हें आर्यसमाजी लेखकों व पत्र तथा पत्रकारों की प्रस्तावित वृहद सूची में शामिल कर सकें।

पता:aap-subhash@gmail-com]

Phone: 0 80066533113

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह